प्रश्नों से जुड़ी हुई शब्दावलियाँ एवं उनका अर्थ-विस्तार:-

1. Discuss (विवेचन कीजिए)- किसी विषय पर विभिन्न विचार एवं दृष्टिकोण पर चर्चा करते हुए फिर अपना विचार देना।
2. Explain & Elucidate (व्याख्या कीजिए)- अधिक सूचनाएँ प्रदान कर किसी तथ्य को, जिसे समझना थोड़ा कठिन है अधिक स्पष्ट करना।
3. Analyse (विश्लेषण करना)- किसी तथ्य का परीक्षण अथवा गहराई से विचार करना ताकि इसका अर्थ स्पष्ट हो जाए।
4. Criticise (आलोचना करना)- किसी भी तथ्य के अच्छे एवं बुरे पक्ष पर अपना निर्णय देना।
5. Comment (टिप्पणी करना)- किसी कथन अथवा कार्य का मूल्यांकन करना अथवा परीक्षण करना।
6. Describe (वर्णन करना)- किसी तथ्य अथवा व्यक्ति के विषय में विस्तार से लिखना ताकि उसका स्वरूप स्पष्ट हो जाए।
7. Evaluate (मूल्यांकन करना)- किसी तथ्य पर सावधानी से विचार करना तथा यह निर्धारित करना कि यह हद तक महत्वपूर्ण और उपयोगी है।
8. Do you agree? (क्या आप सहमत हैं?)- अधिकतर स्थितियों में असहमति ही जतानी होती है।
9. In the light of above statement (अमुक कथन के प्रकाश में)- आपको उस कथन की सीमा में बंध कर ही लिखना है।
10. Examine (परीक्षण कीजिए)- पाठक के लिए समान्यत: उस पहलू को उजागर करना जो वह नहीं जानता है।

8वीं कक्षा की एन.सी.ई.आर.टी. पुस्तक

- एनसीईआरटी की पुस्तकें सामाजिक विज्ञान से जुड़े हुए महत्वपूर्ण विषयों पर संक्षिप्त परंतु स्तरीय ज्ञान प्रदान करती हैं। नई एनसीईआरटी की पुस्तकें नेशनल एजुकेशनल फ्रेमवर्क (NCF), 2005 के निर्देशन पर आधारित है।
- एनसीएफ, 2005 का बल बच्चों में रटने की प्रवृत्ति को हतोत्साहित कर सोचने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देना है। इसका बल विभिन्न मानविकी विषयों के बीच की दीवारों अथवा घेरे को तोड़कर अंतर्अनुशासनात्मक दृष्टिकोण को प्रोत्साहन देना भी है।
- अत: एनसीईआरटी की पुस्तकें केवल ज्ञान का स्रोत ही नहीं बल्कि बच्चों में विश्लेषणपरक सोच को प्रोत्साहित करने का साधन भी है।

कैसे, कब और कहां?

- इतिहास में तिथियां क्यों महत्वपूर्ण हैं?
- इतिहास में विभाजन का आधार क्या हो? जेम्स मिल द्वारा किए जाने वाले विभाजन का दोष क्या है?
- 'औपनिवेशिक' से क्या तात्पर्य है?
- पुस्तक के मुख्य पृष्ठ पर 'हमारा अतीत' की जगह 'हमारे अतीत' शब्द का प्रयोग क्यों हुआ है?
- ब्रिटिश आधिकारिक रिकॉर्ड को क्यों सुरक्षित रखना चाहते थे? क्या इन रिकॉर्ड के आधार पर जनसामान्य का इतिहास लिखा जा सकता है?

व्यापार से साम्राज्य तक कंपनी की सत्ता स्थापित होती है

- किन परिस्थितियों में ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कंपनी का पूर्वी व्यापार पर एकाधिकार मिला? किस कारण से इसका अन्य यूरोपीय कंपनियों से प्रतिस्पर्द्धा शुरू हुई?
- बंगाल में कंपनी ने व्यापार का विस्तार क्यों किया तथा यह किस प्रकार नवाब के साथ मतभेद का कारण बना?
- बंगाल की दीवानी से कंपनी को क्या लाभ मिला?
- ब्रिटिश कंपनी तथा मैसूर के टीपू के बीच संघर्ष के क्या कारण थे? क्या टीपू ब्रिटिश चुनौती का जवाब दे सका?
- 19वीं सदी के आरंभ में ब्रिटिश सर्वोच्च सत्ता की अवधारणा क्या थी? विभिन्न गवर्नर जनरलों ने इस नीति को किस प्रकार आगे बढ़ाया?
- किस प्रकार कंपनी का प्रशासन भारतीय शासकों के प्रशासनिक ढांचे से भिन्न था?

ग्रामीण क्षेत्र पर शासन चलाना

- बंगाल का दीवान बनने के पश्चात कंपनी ने भूमि सुधार के लिए कौन से कदम उठाए?
- राजस्व व्यवस्था की मुनरो पद्धति क्या थी तथा उसके क्या दोष थे?
- महालवाड़ी पद्धति स्थाई बंदोबस्त से किस रूप में भिन्न थी?
- किसानों को नील की खेती की ओर आकर्षण क्यों नहीं था तथा किन कारणों से बंगाल में नील की खेती का अवसान हुआ?

आदिवासी, दीकू तथा स्वर्ण युग की कल्पना

- क्या आदिवासी समूह किसी एक पेशे से जुड़े हुए थे अथवा उन्होंने अलग-अलग पेशे अपनाए थे?
- ब्रिटिश शासन ने आदिवासियों के जीवन में क्या परिवर्तन लाए?
- ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आदिवासियों ने क्या प्रतिक्रिया दिखाई?

- बिरसा ने किस प्रकार आदिवासियों को संगठित किया?

जब जनता बगावत करती है

- 1857 के महाविद्रोह में किन सामाजिक वर्गों ने भागीदारी निभाई तथा ब्रिटिश शासन के विरुद्ध उनके असंतोष के क्या कारण थे?
- किस प्रकार इसका प्रसार और भारत के विभिन्न क्षेत्रों में हुआ?
- 1857 के महाविद्रोह ने ब्रिटिश नीति में क्या परिवर्तन लाए?

उपनिवेशवाद और शहर

- ब्रिटिश शासन के अंतर्गत विनगरीकरण से क्या तात्पर्य है?
- ब्रिटिश प्रशासन ने दिल्ली को किस प्रकार प्रभावित किया?

बुनकर, लोहा बनाने वाले और फैक्ट्री मालिक

- ब्रिटेन के औद्योगीकरण और भारत पर ब्रिटिश विजय और औपनिवेशिक करण का आपस में क्या संबंध था?
- इंग्लैंड के ऊन और रेशम उत्पादकों ने 18वीं सदी की शुरुआत में भारत से आयात होने वाले कपड़े का विरोध क्यों किया था?
- ब्रिटेन में सूती कपड़ा उद्योग के विकास का भारत के कपड़ा उत्पादकों पर क्या प्रभाव पड़ा?
- औपनिवेशिक शासन के दौरान स्थापित भारतीय कपड़ा कारखानों को किन समस्याओं का सामना करना पड़ा?
- 19वीं सदी में भारतीय लौह प्रगलन उद्योग का पतन क्यों हुआ?
- प्रथम विश्व युद्ध का भारत के उद्योगों पर क्या प्रभाव पड़ा?
- जापान का औद्योगिकरण भारत के औद्योगीकरण से कैसे अलग था?

देसी जनता को सभ्य बनाना, राष्ट्र को शिक्षित करना

- प्राच्यवादियों ने भारतीय इतिहास, दर्शन और कानून का अध्ययन क्यों किया?
- 19वीं सदी के आरंभ के ब्रिटिश अधिकारी और प्राच्यवादी अधिकारियों के दृष्टिकोण में क्या अंतर देखने को मिलता है?
- वुड डिस्पैच क्या था?
- औपनिवेशिक शासन के दौरान स्थानीय पाठशाला में शिक्षा का स्वरूप क्या था?
- शिक्षा के विषय में महात्मा गांधी एवं रविंद्र नाथ टैगोर के विचार क्या थे? इनमें समानताएं और असमानताएं क्या थीं?

महिलाएं, जाति एवं सुधार

- 19वीं सदी के समाज की क्या विशेषताएं थी?
- 19वीं सदी के आरंभ में सामाजिक परंपराओं, रीति-रिवाजों और मूल्य मान्यताओं से संबंधित बहसों एवं चर्चाओं के स्वरूप में किस कारण से परिवर्तन आया?
- विधवाओं की जिंदगी में बदलाव लाने के लिए भारतीय समाज सुधारकों ने क्या कदम उठाए?
- स्त्री शिक्षा के लिए समाज सुधार के द्वारा किए गए कार्यों की चर्चा करें।
- औपनिवेशिक काल में जाति के विरुद्ध भारतीय सुधारकों के द्वारा आंदोलन क्यों किए गए? उनके द्वारा कौन-कौन से आंदोलन किए गए?
- अम्बेडकर ने मंदिर प्रवेश आंदोलन क्यों शुरू किया?
- ज्योतिबा फूले और रामास्वामी नायकर राष्ट्रीय आंदोलन की आलोचना क्यों करते थे? उनकी आलोचना का राष्ट्रीय आंदोलन पर क्या प्रभाव पड़ा?

दृश्य कलाओं की बदलती दुनिया

- यूरोपीय चित्रकारों ने भारतीय चित्रकला शैली में किन परिवर्तनों को जन्म दिया?
- औपनिवेशिक शासन के दौरान किन भारतीय राज्यों में दरबार में कलाकारों को संरक्षण प्रदान किया था?
- 19वीं सदी में भारत के शहरों में जन्मी नई लोक कलाओं के विषय में बताइए?
- 19वीं सदी के अंत में कला और राष्ट्रवाद के मध्य स्थापित हुए संबंध के विषय में बताइए?

राष्ट्रीय आंदोलन का संघटन : 1870 के दशक से 1947 तक

- भारत में राष्ट्रवाद के उदय में राजनीतिक संगठनों की भूमिका पर प्रकाश डालिए।
- भारत में राष्ट्रवाद के उदय में ब्रिटिश नीतियों की भूमिका क्या रही?
- आरंभिक 20 वर्षों तक कांग्रेस को मध्य मार्गी पार्टी क्यों माना जाता था? इन वर्षों में कांग्रेस ने किन मुद्दों को उठाया था?
- कांग्रेस में आमूल परिवर्तनवादी की राजनीति मध्यम मार्गियों की राजनीति से किस तरह भिन्न थी?
- बंगाल विभाजन का राष्ट्रीय आंदोलन पर क्या प्रभाव पड़ा?
- प्रथम विश्व युद्ध से भारत पर पड़ने वाले आर्थिक प्रभावों की चर्चा कीजिए।
- राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भूमिका के विषय में चर्चा कीजिए।
- 1937 से 47 तक की उन घटनाओं पर चर्चा करें जिनके फलस्वरूप पाकिस्तान का जन्म हुआ?
- राष्ट्रीय आंदोलन में महात्मा गांधी की भूमिका की चर्चा करें।
- महात्मा गांधी को जनता का महात्मा क्यों कहा जाता था?

- राष्ट्रीय आंदोलन में सुभाष चंद्र बोस की भूमिका की चर्चा करें।
- राष्ट्रीय आंदोलन में भगत सिंह के योगदान की चर्चा करें।

स्वतंत्रता के बाद

- 15 अगस्त 1947 में जब भारत को स्वतंत्रता मिली तो उसके सम्मुख कौन सी चुनौतियां थी?
- संविधान सभा द्वारा निर्मित भारतीय संविधान की प्रमुख विशेषताओं के बारे में बताइए।
- भारत में सार्वभौमिक व्यस्क मताधिकार को अपनाना क्रांतिकारी कदम क्यों माना गया?
- संविधान सभा के द्वारा भारतीय संविधान में आरक्षण का प्रावधान क्यों जोड़ा गया?
- अंग्रेजों के भारत से जाने के पश्चात भी संविधान सभा ने अंग्रेजी भाषा को संविधान में क्यों जगह दी?
- स्वतंत्रता से पहले भाषाई आधार पर पृथक प्रांतों के गठन का समर्थन करने वाली कांग्रेस पार्टी स्वतंत्रता के बाद भाषा के आधार पर प्रांतों के गठन से क्यों सहमत नहीं थे?
- आजादी के बाद आरंभिक दशकों में देश के आर्थिक विकास के लिए उठाए गए कदमों की चर्चा करें।
- स्वतंत्रता के बाद से लेकर आज तक हम संविधान द्वारा तय किए गए आदर्शों को किस हद तक साकार कर पाए हैं?
- गुटनिरपेक्षता
- भारत में भाषा के आधार पर राज्यों का गठन किस प्रकार देश की एकता और अखंडता के लिए लाभदायक सिद्ध हुआ? इसकी चर्चा श्रीलंका के संदर्भ में करें।

भारतीय विरासत और संस्कृति एवं आधुनिक भारत (मुख्य परीक्षा पाठ्यक्रम)

- **भारतीय संस्कृति** में प्राचीन काल से आधुनिक काल तक के कला के रूप, साहित्य और वास्तुकला के मुख्य पहलू शामिल होंगे।
- **18वीं सदी के लगभग मध्य से लेकर वर्तमान समय तक** का आधुनिक भारतीय इतिहास-महत्त्वपूर्ण घटनाएँ, व्यक्तित्त्व, विषय।
- **स्वतंत्रता संग्राम**- इसके विभिन्न चरण और देश के विभिन्न भागों से इसमें अपना योगदान देने वाले महत्त्वपूर्ण व्यक्ति/उनका योगदान।
- **स्वतंत्रता के पश्चात्** देश के अंदर एकीकरण और पुनर्गठन।

भारतीय इतिहास का विभाजन

- सर्वप्रथम जेम्स मील ने 19वीं सदी में भारतीय इतिहास का अध्ययन किया तथा उसे हिन्दू, मुस्लिम एवं ब्रिटिश काल में बाँटा। इस प्रकार उसने भारतीय इतिहास का साम्प्रदायीकरण किया।
- आगे राष्ट्रवादी लेखकों ने नामकरण को बदलकर यूरोपीय मॉडल पर प्राचीन काल, मध्यकाल एवं आधुनिक काल का नाम दिया। परंतु विभाजन का आधार पूर्ववत् ही बना रहा, यथा- तुर्की शासन की स्थापना के साथ मध्ययुग तथा प्लासी के युद्ध के साथ आधुनिक युग का आरंभ।
- 1960 तथा 1970 के दशक में मार्क्सवादी लेखकों ने पूर्व-मध्यकाल की अवधारणा दी तथा उसका काल निधरिण सामंतवाद के उद्भव के साथ 750 ई. से 1200 ई. के बीच किया।
- 1980 तथा 1990 के दशक में संशोधनवादी विद्वानों ने एक पूर्व आधुनिक काल की अवधारणा दी है तथा उसकी शुरूआत प्लासी के युद्ध से बहुत पहले मानी है।
- **अतः भारत के इतिहास का विभाजन निम्नलिखित रूप में किया जा सकता है:**
  - प्राचीन काल
  - पूर्व मध्यकाल
  - मध्यकाल
  - पूर्व आधुनिक काल
  - आधुनिक काल

आधुनिक काल

आधुनिक काल के इतिहास को निम्नलिखित खण्डों में बाँटकर अध्ययन किया जा सकता है-

1. 18वीं सदी का इतिहास
2. उपनिवेशवाद
3. राष्ट्रवाद
4. स्वतंत्रता के उपरांत भारत

18वीं सदी का इतिहास

इसे हम दो भागों में बांटकर देखेंगे -

1. 18वीं सदी के पूर्वार्द्ध
2. 18वीं सदी का उत्तरार्द्ध

18वीं सदी का पूर्वार्द्ध

इस काल के अध्ययन में हमारा बल निम्नलिखित पहलुओं पर होगा -

1. मुगल साम्राज्य का पतन तथा क्षेत्रीय राज्यों की स्थापना।
2. मराठे मुगल साम्राज्य को स्थापित करने में क्यों विफल रहे?
3. 18वीं सदी के पूर्वार्द्ध के काल को पतन अथवा अवनति का काल माना जाये अथवा प्रगति या नयी संभावनाओं का काल माना जाये।

मुगल साम्राज्य के विघटन के पश्चात् भारत का राजनीति परिदृश्य?

मुगल साम्राज्य के विघटन के पश्चात् अनेक क्षेत्रीय राज्य स्थापित हुए; इन्हें निम्नलिखित उपसमूह में बाँटकर देख सकते हैं -

1. उत्तराधिकारी राज्यः-

- इन राज्यों के संस्थापक पुराने मुगल अधिकारी थे इन्होंने मुगल साम्राज्य की कमजोरी का लाभ उठाकर स्वतंत्र राज्य की स्थापना कर ली थी। इन्हें हम निम्नलिखित रूप में देख सकते हैं -
- **बंगाल** :- स्वतंत्र बंगाल राज्य का संस्थापक मुर्शिद कुली खान था, जो 1780 में बंगाल के दीवान के पद पर नियुक्त हुआ था, परंतु औरंगजेब की मृत्यु का फायदा उठाकर उसने बंगाल के सूबेदार का पद भी ग्रहण कर लिया। अतः उसे नवाब कहा गया।
- 1727 ई. में उसका उत्तराधिकारी उसका दामाद शुजाउद्दीन (1727-1739 ई.) हुआ। फिर उसका उत्तराधिकारी उसका पुत्र सरफराज खान (1739-40 ई.) हुआ। सरफराज खान को मारकर अलीवर्दी खान ने 1740 ई. में गद्दी प्राप्त कर ली और 1756 ई. तक शासन किया।
- **अवध** :- 1722 ई. तक 'सआदत खान' नामक मुगल वजीर ने इसे व्यावहारिक रूप में स्वतंत्र बना दिया। 1739 ई. में उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका उत्तराधिकारी सफदरजंग हुआ, उसे मुगल-वजीर का पद मिला। अतः अवध के नवाब को 'नवाब-वजीर' कहा गया। सफदरजंग का उत्तराधिकारी शुजाउद्दौला हुआ जिसने बक्सर के युद्ध में हिस्सा लिया।
- **हैदराबाद** :- स्वतंत्र हैदराबाद राज्य का संस्थापक निजाम-उल-मुल्क था। 1722 ई. और 1724 ई.के बीच वह मुगल वजीर के पद पर रहा, परंतु आगे वह असंतुष्ट होकर 1724 ई. में हैदराबाद चला गया तथा वहाँ स्वतंत्र राज्य बना लिया।

2. विद्रोही राज्य :-

- **सिख राज्यः**- सिख पंथ गुरूनानक के द्वारा एक शांतिपूर्ण पंथ के रूप में स्थापित किया गया। इसमें आरंभ से ही दो कारणों से सामूहिकता की भावना मजबूत हो गई थी-
  1. संगत लगाना।
  2. लंगर छकना (सामूहिक भोज)
- आगे जब मुगल साम्राज्य से इसकी टकराहट हुई, तो फिर यह सैनिकीकरण की ओर मुड़ गया। आगे गुरू गोविंद सिंह ने खालसा की स्थापना कर सिख पंथ को एक मजबूत सैन्य संगठन में बदल दिया, परन्तु न तो गुरू गोविंद सिंह और न ही उनके शिष्य बंदा बहादुर, सिख राज्य को स्थापित कर सके।
- आगे 1761 ई. में पानीपत के तृतीय युद्ध से उत्पन्न खालीपन को भरने के क्रम में 1764 में अमृतसर में एक स्वतंत्र सिख राज्य की स्थापना हुई। आगे रंजीत सिंह के अंतर्गत सिख राज्य भारत की प्रमुख शक्ति बन गया।
- **मराठा राज्य** :- मराठे महाराष्ट्र के जमींदार थे, उन्हें राज्य के रूप में संगठित करने का काम 1774 ई. में शिवाजी ने किया था। शिवाजी ने एक मराठा राज्य की स्थापना की। उसने पेशवाओं के अधीन एक बड़े साम्राज्य का रूप ले लिया। परंतु पेशवा बालाजी बाजीराव के काल तक एक मराठा परिसंघ अस्तित्व में आ चुका था। इसके केन्द्र में पूना का पेशवा था तथा इसके अन्य घटक ग्वालियर के सिंधिया, इंदौर के होल्कर, नागपुर के भौंसले एवं बड़ौदरा के गायकवाड़ थे।
- **जाट राज्य** :- जाट सामान्यतः किसान थे तथा वे दिल्ली, आगरा, मथुरा आदि एवं उसके आस-पास फैले हुए थे। उनके बीच कुछ महत्वाकांक्षी जमींदार भी थे। इन्हीं में से एक गोकुल जाट ने 1667 ई. में मुगल साम्राज्य के विरूद्ध विद्रोह किया। परन्तु इस विद्रोह को दबा दिया गया। फिर 1685 ई. में राजाराम जाट ने विद्रोह किया, इस विद्रोह को भी कुछ कठिनाईयों के बावजूद दबा दिया गया। परन्तु आगे चूड़ामन जाट एवं बदन सिंह के अंतर्गत जाट राज्य की स्थापना हो गई।
- **अफगान** :- रूहेला राज्य की स्थापना अवध के उत्तर में रूहेला अफगानों द्वारा की गई। इस राज्य से जुड़े हुए कुछ महत्वपूर्ण रूहेला सरदार नजीबुद्दौला और हाफिज अहमद खान थे।

3. मुगल साम्राज्य की परिधि के बाहर के राज्य :-

- **मैसूर** :- यह विजयनगर साम्राज्य का उत्तराधिकारी राज्य था और ओड्यार वंश का शासन था, परन्तु एक सैनिक कमांडर हैदर अली ने उसकी सत्ता छीन ली और हैदर अली तथा उसके उत्तराधिकारी टीपू सुल्तान के अधीन एक शक्शिाली मैसूर राज्य की स्थापना हुई।
- **कालीकट** :- कालीकट में जमोरिन की सत्ता स्थापित थी। यह राज्य विदेश व्यापार के लिए प्रसिद्ध था।
- **त्रावणकोर** :- केरल क्षेत्र में त्रावणकोर, मार्तण्ड वर्मा एवं राम वर्मा के अधीन एक महत्वपूर्ण राज्य के रूप में स्थापित हुआ। मार्तण्ड वर्मा को यह श्रेय जाता है कि उसने डचों को पराजित कर भारत से बाहर खदेड़ दिया।

18वीं शताब्दी का विवाद

इस युग को अंधकार युग के रूप में चित्रित करने के आधार–

1. इस अवधि (18वीं सदी का पूर्वार्द्ध) को राजनीतिक विघटन के काल के रूप में चिह्नित किया जाता है।
2. इसे आर्थिक विघटन का काल भी समझा जाता था।

परंतु अंधकार युग की धारणा को निम्नलिखित आधार पर अस्वीकृत कर दिया गया–

1. यद्यपि मुगल साम्राज्य विघटित हो रहा था परंतु उत्तराधिकारी राज्य और साथ ही साथ कुछ अन्य राज्य अपने संबंधित राज्य क्षेत्र में कुशल सरकार प्रदान कर रहे थे।
2. यहाँ तक कि आर्थिक मोर्चे पर भी इसे निम्नलिखित कारणों से विघटन के काल के रूप में नहीं देखा जाना चाहिये–

- यूरोपियन कंपनियों की भूमिका के कारण व्यापार का विस्तार हुआ था।
- नकदी फसलों के उत्पादन में विस्तार हुआ था।

प्रश्नः मराठे, मुगल साम्राज्य को विस्थापित कर भारत को एक वैकल्पिक साम्राज्य देने में क्यों विफल रहे हैं?

उत्तरः मराठा राज्य का दक्षिण भारत से उत्तर भारत की ओर तेजी से विस्तार हुआ, एक समय ऐसा आया कि यह एक अखिल भारतीय आकार लेता प्रतीत हुआ। फिर ऐसा लगने लगा कि यह मुगल साम्राज्य का विकल्प दे सकेगा, परन्तु अपनी संस्थागत कमजोरी या संस्थागत दुर्बलता या नीतिगत कमियों के कारण यह साम्राज्य बनाने में विफल हो गया। इसे निम्नलिखित रूप में समझा जा सकता है–

1. मराठा परिसंघ का सामंती चरित्र :- मराठा परिसंघ के केन्द्र में पेशवा था तथा उसके इर्द-गिर्द अन्य घटक सिंधिया, गोखले, होल्कर तथा गायकवाड़ थे। धीरे-धीरे इनकी शक्ति एवं महत्वाकांक्षा बढ़ती गई तथा केन्द्रीय शक्ति कमजोर पड़ने लगी।

2. कमजोर वित्तीय आधार :-चूंकि मराठा राज्य का वित्तीय आधार कमजोर था। इसलिए अतिरिक्त आमदनी के लिए वे चौथ एवं सरदेशमुखी पर निर्भर हो गये। इस कारण मराठा राज्य का चरित्र सैनिक एवं सामंती हो गया।

3. मराठा राज्य के द्वारा आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहन नहीं– रोमन साम्राज्य की तरह मराठा साम्राज्य भी बाहर से प्राप्त धन पर निर्भर बना रहा। इसने कृष्णा-तुंगभद्रा दोआब एवं गंगा-यमुना दोआब के उपजाऊ भू-भाग पर प्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित कर कृषि के विकास में रूचि नहीं दिखाई।

4. संकट के समय भी मराठा सरदार संयुक्त मोर्चा बनाने में विफल रहे। इसका ज्वलंत उदाहरण है पानीपत का तृतीय युद्ध।

प्रश्नः सुस्पष्ट कीजिए की मध्य 18वीं सदी का भारत विखंडित राजतंत्र की छाया से किस प्रकार ग्रसित था? (150 शब्द, यूपीएससी 2017)
अथवा क्या आप इस कथन से सहमत हैं?

उत्तरः 18वीं सदी के मध्य में भारत के राजनीतिक परिदृश्य का महत्वपूर्ण लक्षण था बहुराज्यीय व्यवस्था का उद्भव। यह वह काल था जब एक तरफ शक्तिशाली मुगल साम्राज्य विघटित हो गया था तथा अनेक छोटे-छोटे क्षेत्रीय राज्य स्थापित हो चुके थे। इन राज्यों को हम दो समूह में बाँटकर देख सकते हैं :-

1. उत्तराधिकारी राज्य
2. विद्रोही शक्तियों द्वारा स्थापित राज्य

पहले समूह में हम अवध, बंगाल, हैदराबाद जैसे राज्यों की गणना कर सकते हैं। ये राज्य स्वयं मुगल अधिकारियों के द्वारा स्थापित किये गये थे। उदाहरण के लिए, बंगाल में मुर्शिद कुली खान, अवध में सआदत खान एवं हैदराबाद में निजाम-मुल-मुल्क आदि।

इसी प्रकार विद्रोही राज्य में हम सिक्ख राज्य, मराठा राज्य, जाट राज्य एवं अफगान राज्य की गणना करते हैं। इन राज्यों की स्वतंत्रता के बाद मुगल साम्राज्य महज नाम का रह गया था। उसकी वास्तविक संप्रभुता समाप्त हो चुकी थी। सबसे बढ़कर इन राज्यों के बीच प्रतिस्पर्द्धा एवं वैमनस्या थी। इसका लाभ ब्रिटिश कंपनी ने उठाया, अपितु उनके बीच व्याप्त अनेकता से फायदा उठाते हुए कंपनी ने अपने को राजनीतिक शक्ति के रूप में स्थापित कर लिया।

इस प्रकार, उपर्युक्त आधार पर यह हम ऐसा कह सकते हैं कि अठारहवीं सदी का भारत विखण्डित राजतंत्र की छाया से ग्रसित था।

18वीं सदी का उत्तरार्द्ध

इस काल की विशेषता है भारत में यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियों की गतिविधियाँ, उनका आपस में तथा भारतीय राज्यों के साथ संबंध तथा ब्रिटिश कम्पनी का व्यापारिक कम्पनी से राजनीतिक शक्ति के रूप में ढलना।

भारत में यूरोपीय कम्पनियों का आगमन

1. पुतर्गाली कम्पनी :-

- पुर्तगालियों ने भारत में वैकल्पिक मार्ग की खोज के पश्चात् भारत में अपने व्यापार का विस्तार किया। सर्वप्रथम उन्होंने कोच्चि (केरल) में एक किला बनवाया तथा 1505 में गवर्नर का पद स्थापित किया। पहला गवर्नर डी-अल्मीडा बना फिर आगे चलकर उसका उत्तराधिकारी अल्बुकर्क हुआ।
- 1509 में पुर्तगीजों ने ओरमुज पर कब्जा कर लिया। 1510 में उन्होंने गोवा को जीत लिया। फिर उन्होंने भटकल नामक स्थान पर किले बनवाये। पुर्तगीजों ने ओरमुज से लेकर मलक्का तक एक बड़े सामुद्रिक साम्राज्य की स्थापना की तथा उसे 'एस्तादो द इण्डिया' कहा। सबसे बढ़कर पुर्तगीजों ने एशिया में खुले समुद्र नीति का उल्लंघन किया और एक नयी व्यवस्था कायम कर दी जिसे कार्तेज पद्धति का नाम दिया जाता है। पुर्तगीजों की मुख्य रूचि मसाला व्यापार में रही थी।

2. डच एवं ब्रिटिश कम्पनी :-

- जब 17वीं सदी के आरम्भ में डच एवं ब्रिटिश का आगमन हुआ तो पुर्तगीजों का व्यापारिक एकाधिकार समाप्त हो गया। आरम्भ में, डच की ही तरह ब्रिटिश कम्पनी भी मसाला व्यापार के उद्देश्य से आई थी। बाद में ब्रिटिश और डच कम्पनी के बीच लम्बा संघर्ष चला।
- ब्रिटिश ने 1622 तक ओरमुज का क्षेत्र पुर्तगीजों से छीन लिया और फिर ओरमुज से लेकर बंगाल की खाड़ी तक के व्यापार पर उसका कब्जा हो गया जबकि बंगाल की खाड़ी से मलक्का तक के व्यापार पर डचों का नियंत्रण रहा। ये कम्पनियाँ नई पीढ़ी की कम्पनियाँ थीं। इनकी पहचान ज्वाईन्ट स्टॉक कम्पनी के रूप में की जाती। ये आधुनिक प्रकार की कम्पनियाँ थी जिनका प्रबंधन भी प्रोफेशनल होता था।
- जहाँ पुर्तगाली कम्पनी की मुख्य रूचि मसाला व्यापार में रही थी वहीं डच एवं ब्रिटिश कम्पनियों ने भारत के सूती वस्त्र एवं रेशमी वस्त्र के लिए क्रमशः दक्षिण-पूर्वी एशिया तथा यूरोप में एक बड़ा बाजार कायम किया। इसके अतिरिक्त ब्रिटिश एवं डच कम्पनियाँ नील, अफीम, शोरा आदि का भी निर्यात करती थीं। उन्होंने भारत से निर्यात व्यापार को अत्यधिक प्रोत्साहन दिया जिसे 'व्यापारिक क्रान्ति' के नाम से जाना जाता है।

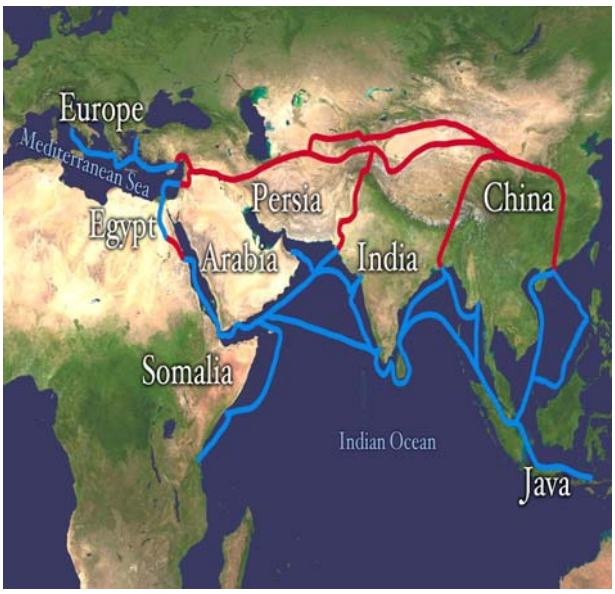

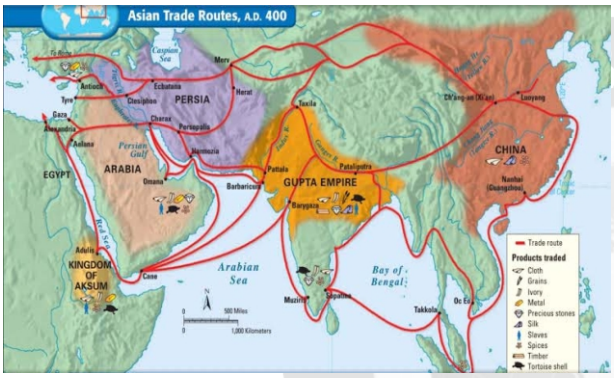

3. फ्रांसीसी कम्पनी :-

- फ्रांसीसी कम्पनी की स्थापना 1664 ई. में हुई थी। वह सबसे बाद में भारत में आई तथा 1668 में पहली फैक्ट्री सूरत में स्थापित की। फिर उसकी फैक्ट्री मसुलीपट्टम् तथा आगे पांडिचेरी तथा अन्य क्षेत्रों में स्थापित हुई। सबसे दिलचस्प तथ्य यह है कि फ्रांसीसी कम्पनी सबसे विलम्ब से आई थी लेकिन ब्रिटिश कम्पनी को सबसे अधिक चुनौती फ्रांसीसी कम्पनी से मिल रही थी। इसके निम्नलिखित कारण थे –

1. फ्रांस यूरोप में एक बड़े एवं शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में स्थापित था तथा वैश्विक साम्राज्य के निर्माण के मोर्चे पर ब्रिटिश कम्पनी को सशक्त चुनौती दे रहा था।
2. भारत में जिस प्रकार ब्रिटिश कम्पनी को ब्रिटिश सरकार का समर्थन प्राप्त था, उसी प्रकार फ्रांसीसी कम्पनी को भी फ्रांसीसी सरकार का समर्थन प्राप्त था क्योंकि भारत में ब्रिटिश एवं फ्रांसीसी कम्पनी के बीच होने वाला संघर्ष एक वैश्विक संघर्ष का हिस्सा था।

भारत में ब्रिटिश शासन की नींव

ब्रिटिश कंपनी ने वाणिज्यिक गतिविधियों से राजनीतिक शक्ति अर्जित करने की ओर कदम क्यों बढ़ाया?

1. भारत में व्यापार करने के लिये आवश्यक पूँजी जुटाने के उद्देश्य से कंपनी भारत में अतिरिक्त संसाधनों की अधीरता से तलाश कर रही थी।
2. ब्रिटिश कंपनी भारतीय व्यापार से अन्य यूरोपीय प्रतिद्वंद्वियों को समाप्त करना चाहती थी।

कर्नाटक युद्ध

कर्नाटक युद्ध महज ब्रिटिश कम्पनी एवं फ्रांसीसी कम्पनी के बीच का संघर्ष नहीं बल्कि यह ब्रिटिश साम्राज्य और फ्रांसीसी साम्राज्य के बीच का भी संघर्ष था। इसलिए इस युद्ध ने भारत में फ्रांसीसी कम्पनी के साथ फ्रांस के वैश्विक साम्राज्य के भविष्य का भी निर्णय कर दिया।

कर्नाटक युद्ध के लिए एक से अधिक कारक उत्तरदायी थे ये इस प्रकार हैं –

1. ये युद्ध यूरोपीय प्रश्न से जुड़े हुए थे।
2. ये युद्ध फ्रांसीसी एवं ब्रिटिश कम्पनी की राजनीतिक महत्वाकांक्षा से भी जुड़े हुए थे।
3. कर्नाटक युद्ध का एक उद्देश्य फ्रांसीसी एवं ब्रिटिश कम्पनी के द्वारा दक्षिण के व्यापार पर नियंत्रण स्थापित करना था।

प्रथम कर्नाटक युद्ध (1744-48 ई.) :-

- यह यूरोप में ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार के मुद्दे पर आरंभ हुआ था। यह युद्ध भारत में दोनों कम्पनियों के बीच अनिर्णित रहा था।
- यह विशेषकर सेंट टॉमे के युद्ध के लिए प्रसिद्ध है जिसने भारतीयों की तुलना में यूरोपीय युद्ध तकनीकी की श्रेष्ठता सिद्ध कर दी।

द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1749-54 ई) :-

- यह युद्ध यूरोपीय कंपनियों की महत्वाकांक्षा के कारण आरंभ हुआ था क्योंकि इन कंपनियों के द्वारा हैदराबाद और कर्नाटक के मामले में हस्तक्षेप किया गया था। इस युद्ध के परिणामस्वरूप हैदराबाद पर फ्रांसीसी कंपनी तथा कर्नाटक पर ब्रिटिश कंपनी का वर्चस्व हो गया।

तृतीय कर्नाटक युद्ध (1758-63 ई) :-

- तृतीय कर्नाटक युद्ध भी यूरोपीय प्रश्न के साथ आरम्भ हुआ था क्योंकि यह युद्ध यूरोप में हो रहे सप्तवर्षीय युद्ध का हिस्सा था। इस युद्ध में डुप्ले जैसे एक दूरदर्शी अधिकारी की अनुपस्थिति एवं फ्रांसीसी सरकार के अत्यधिक हस्तक्षेप के कारण फ्रांसीसी कम्पनी की स्थिति कमजोर हो गई और अन्ततः 1760 के वांडीवाश के युद्ध में फ्रांसीसी कम्पनी निर्णायक रूप से पराजित हो गयी। अतः भारत में अपने राजनीतिक वर्चस्व स्थापित करने का उसका सपना समाप्त हो गया।
- उधर यूरोप में सप्तवर्षीय युद्ध के समय ब्रिटिश साम्राज्य के हाथों फ्रांसीसी साम्राज्य की हार ने फ्रांस को एक वैश्विक साम्राज्य स्थापित करने का सपना चकनाचूर कर दिया क्योंकि इस युद्ध में फ्रांस की हार के कारण उसके हाथों से एक तरफ कनाडा तथा दूसरी तरफ भारत जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र निकल गया।

भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना

ब्रिटिश सफलता के कारण–

- ब्रिटिश कंपनी व्यावसायिक रूप से अधिक पेशेवर और सफल थी।
- फ्राँसीसी कंपनी के विपरीत ब्रिटिश कंपनी एक ज्वाइन्ट स्टॉक कंपनी थी, इसलिये इसमें सरकार का अनुचित हस्तक्षेप कम था।
- ब्रिटिश कंपनी को सक्षम अधिकारियों, जैसे- क्लाइव और सर आयरकूट की सेवा मिली।
- बंगाल के संसाधनों ने ब्रिटिश कंपनी को लाभान्वित किया।

यूरोपीय कंपनियों के आगमन का क्रम :-

- **पुर्तगाल-डच-ब्रिटिश-डेनिश-फ्रांसीसी**

प्रश्नः कर्नाटक युद्ध ने ब्रिटिश एवं फ्रांसीसी कम्पनी का भारत के अंदर ही नहीं बल्कि भारत के बाहर भी ब्रिटिश एवं फ्रांसीसी साम्राज्य के भविष्य का फैसला कर दिया। परीक्षण कीजिए।

उत्तरः यद्यपि कर्नाटक युद्ध भारत में लड़ा गया था परंतु इसकी जड़ भारत से बाहर यूरोप में थी। यह युद्ध उस संघर्ष का हिस्सा था जो ब्रिटेन और फ्रांस के बीच वैश्विक साम्राज्य के लिए लड़ा जा रहा था। इसलिए भारत में फ्रांसीसी कम्पनी का भविष्य फ्रांसीसी साम्राज्य के भविष्य पर निर्भर करता था।

भारत में फ्रांसीसी गवर्नर डुप्ले ने फ्रांसीसी कम्पनी को व्यापारिक गतिविधियों से राजनीतिक वर्चस्व की दिशा में मोड़ दिया था। इस नीति की अभिव्यक्ति द्वितीय कर्नाटक युद्ध में तब हुई जब डुप्ले ने हैदराबाद एवं कर्नाटक के राज्य पर फ्रांसीसी नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास किया। परंतु फ्रांसीसी सरकार के अनावश्यक हस्तक्षेप तथा ब्रिटिश कम्पनी के चुस्त प्रबंधन एवं बेहतर संसाधन के कारण कम्पनी पिछड़ गई तथा फिर वांडीवाश का युद्ध (1760 ई.) हार जाने के बाद साम्राज्य-निर्माण का इसका स्वप्न चूर हो गया।

दूसरी तरफ, स्वयं फ्रांसीसी साम्राज्य भी ब्रिटिश साम्राज्य से पिछड़ गया था। इसका कारण था ब्रिटिश सरकार की संरचना तथा ब्रिटेन की व्यावसायिक सफलता। अंत में सप्तवर्षीय युद्ध हारने के पश्चात् फ्रांस ने अमेरिकी महाद्वीप में कनाडा एवं एशिया में भारत को खो दिया।

इस प्रकार कर्नाटक युद्ध ने फ्रांसीसी कम्पनी एवं फ्रांसीसी साम्राज्य दोनों के स्वप्न को एक साथ चूर कर दिया।

प्रश्नः क्या आप इस कथन से सहमत हैं कि सरकारी हस्तक्षेप ने भारत में ब्रिटिश कम्पनी के समानान्तर फ्रांसीसी कम्पनी की विफलता को सुनिश्चित कर दिया? अपने मत के पक्ष में उत्तर दीजिए।

उत्तरः- 18वीं सदी का कर्नाटक युद्ध भारत में ब्रिटिश कम्पनी एवं फ्रांसीसी कम्पनी तथा भारत से बाहर ब्रिटिश एवं फ्रांसीसी साम्राज्य के बीच राजनीतिक वर्चस्व के लिए चलने वाले एक दीर्घकालिक संघर्ष का परिणाम था।

भारत के अंदर फ्रांसीसी कम्पनी के पिछड़ जाने का एक प्रमुख कारण कम्पनी के निर्णयन की शक्ति में सरकारी हस्तक्षेप जैसा कारक अवश्य था, परंतु यही एकमात्र कारण नहीं था। फ्रांसीसी कम्पनी के योग्य संचालक डुप्ले को स्वतंत्र रूप से काम करने पर अंकुश लगाने तथा भारत में युद्ध के संचालन के लिए काउन्ट-डी-लाली को सीधे पेरिस से भेजे जाने का निर्णय फ्रांसीसी कम्पनी के लिए बहुत घातक सिद्ध हुआ परंतु इसके अतिरिक्त कुछ अन्य कारकों ने भी फ्रांसीसी विफलता में भूमिका निभाई।

1. फ्रांसीसी कम्पनी की तुलना में ब्रिटिश कम्पनी की बेहतर व्यावसायिक सफलता, ब्रिटिश कम्पनी को रॉबर्ट क्लाइव एवं सर आयरकूट जैसे योग्य अधिकारियों की सेवा प्राप्त होना।
2. ब्रिटिश कम्पनी को बंगाल का संसाधन प्राप्त होना।
3. वैश्विक राजनीति में ब्रिटिश साम्राज्य के साथ प्रतिस्पर्द्धा में फ्रांस का पिछड़ जाना।

इस प्रकार फ्रांसीसी कम्पनी की विफलता के लिए एक से अधिक कारक उत्तरदायी रहे थे।

बंगाल

प्लासी के युद्ध के क्या कारण थे?

प्लासी के युद्ध के एक से अधिक कारण थे। इन्हें निम्न रूप में समझा जा सकता है -

1. मौलिक कारण
2. तात्कालिक कारण

मौलिक कारण :- ये वैसे कारण थे जो बंगाल के नवाबों को आरम्भ से ही परेशान कर रहे थे। ये कारण निम्नलिखित थे -

1. नवाब मुर्शिद कुली खान के समय से ही दस्तक के दुरूपयोग का मुद्दा एक ज्वलंत मुद्दा रहा था।
2. उसी प्रकार, नवाब के दरबार में अधिकारियों की गुटबंदी तथा बंगाल के व्यापारी एवं बैंकरों का असंतोष भी कोई नया मुद्दा नहीं था।

तात्कालिक कारण:- परन्तु दो कारणों से बंगाल में स्थिति बिगड़ती चली गयी -

1. नवाब सिराजुदौला का ब्रिटिश कम्पनी से व्यक्तिगत आक्रोश था, इस कारण ब्रिटिश की ओर से की गई कोई भी गलती ने नवाब में अतिरिक्त आक्रोश पैदा कर दिया। उदाहरण के लिए, बंगाल के पूर्व नवाबों मुर्शिद कुली खाँ और अलीवर्दी खाँ, की संतुलन की नीति को उलटते हुए सिराजुद्दौला ने फोर्ट विलियम में किलेबंदी के मुद्दे पर सीधा फोर्ट विलियम पर हमला कर दिया।
2. नये नवाब में अनुभव की कमी थी जिसके कारण वह अपने दरबार की गुटबंदी को नहीं समझ सका और वहीं दूसरी तरफ ब्रिटिश कम्पनी ने इसका फायदा उठाते हुए नवाब के अधिकारियों को अपने पक्ष में कर लिया तथा युद्ध की स्थिति उत्पन्न कर दी।

प्लासी के युद्ध का प्रभाव:

- कंपनी द्वारा बंगाल के नवाब पर अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया गया।
- कंपनी बंगाल के व्यापार के वित्तपोषण के लिये वृहद् संसाधन प्राप्त कर सकी।
- ब्रिटिश कंपनी अपने यूरोपीय प्रतिद्वंद्वियों को बंगाल से बाहर कर सकी।

1760 में बंगाल में नवाब का परिवर्तन:

- नवाब मीर ज़ाफर को हटाकर मीर कासिम को बंगाल का नया नवाब बनाया गया। ब्रिटिश कंपनी इस घटना को 'बंगाल क्रांति' के रूप में निरूपित करती है परंतु यह किसी भी दृष्टि से क्रांति नहीं थी।

नए नवाब और कंपनी के मध्य संघर्ष तथा बक्सर का युद्ध

- नया नवाब एक स्वतंत्र शासक की तरह व्यवहार करने के लिये दृढ़प्रतिज्ञ था–
  - उसने अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद से बिहार के मुंगेर में स्थानांतरित कर ली।
  - उसने वहाँ एक गन फैक्टरी (कारखाना) भी स्थापित की।
  - उसने मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय से शासन करने में मदद मांगी।
- उसने दस्तक के दुरुपयोग पर अंकुश लगा दिया।

बक्सर के युद्ध का प्रभाव

- कंपनी व्यापारिक कंपनी से राजनीतिक शक्ति के रूप में स्थापित हो गई।
- कंपनी का नियंत्रण केवल बंगाल पर ही नहीं बल्कि अवध और मुगल शासक शाह आलम द्वितीय पर भी हो गया।
- कंपनी ने बंगाल की दीवानी प्राप्त करने के बाद भारतीय व्यापार के वित्तपोषण की समस्या को सुलझा लिया।

प्रश्न: प्लासी का युद्ध एक बड़ा युद्ध नहीं बल्कि एक बड़ा विश्वासघात था। इस कथन का परीक्षण कीजिए।

उत्तर : प्लासी का युद्ध कोई खुला संघर्ष नहीं था और न ही नवाब की सेना और कंपनी की सेना में कोई समानता थी। युद्ध भूमि में नवाब की मुख्य सेना मीर बख्शी मीर जाफर के अधीन हाथ बाँधे खड़ी थी, बस एक छोटी सी सेना ब्रिटिश से लड़ रही थी। परन्तु मीर बख्शी मीर जाफर के विश्वासघातपूर्ण सुझाव के कारण वह सेना भी शीघ्र ही ध्वस्त हो गई।

वास्तव में प्लासी के युद्ध की तुलना क्रिकेट के मैच फिक्सिंग से की जाती है जिसका परिणाम पहले से ही निश्चित था। फर्क बस इतना था की क्रिकेट में विजेता पक्ष, पराजित पक्ष को अग्रिम राशि प्रदान करता है जबकि प्लासी के युद्ध में पराजित पक्ष ही विजेता पक्ष को यह आश्वासन दे रहा था कि भविष्य में उसे खास रकम उपहार में देगा।

प्रश्न: क्या आप इस कथन से सहमत हैं कि प्लासी का युद्ध एक खुला संघर्ष नहीं था, इसलिए यह एक महत्वहीन घटना है। निर्णायक युद्ध बक्सर के युद्ध को ही माना जाना चाहिए?

उत्तर: यह सही है कि प्लासी का युद्ध कोई खुला संघर्ष नहीं था। यह एक बड़ा युद्ध होने के बजाय एक बड़ा विश्वासघात था इसने कहीं भी ब्रिटिश कम्पनी की सैन्य श्रेष्ठता सिद्ध नहीं

की। क्रिकेट मैच फिक्सिंग की तरह इसका भी परिणाम पहले से ही निश्चित था। फिर यह भी सही है कि इसके पश्चात् यदि ब्रिटिश कोई भी युद्ध हार जाते तो उन लाभों से वंचित रह जाते जो उन्हें प्राप्त हुआ था।

परन्तु तस्वीर का एक दूसरा पहलू भी है, उसे भी ध्यान में रखने की आवश्यकता है। प्लासी युद्ध के कई प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लाभ ब्रिटिश कम्पनी को प्राप्त हुए थे। ये निम्नलिखित हैं –

1. प्लासी युद्ध के पश्चात् ब्रिटिश कम्पनी को बड़ी रकम प्राप्त हुई जो कम्पनी के व्यापार में निवेशित किया गया।
2. बंगाल के व्यापार पर कम्पनी का नियंत्रण स्थापित हुआ जिसका फायदा उठाकर कम्पनी अन्य प्रतिद्वंद्वियों को बाहर कर दिया।
3. बंगाल के दस्तकारों पर ब्रिटिश कम्पनी के नियंत्रण के कारण वे सस्ती दर पर व्यापारिक वस्तुएँ प्राप्त कर सके।

इन लाभों का फायदा ब्रिटिश कम्पनी को प्राप्त हुआ और फिर सात वर्षों के पश्चात् ब्रिटिश कम्पनी आसानी से बक्सर का युद्ध जीत सकी। इसलिए प्लासी और बक्सर के युद्ध को दो पृथक युद्ध मानने के बजाय एक ही युद्ध के दो चरण मानना चाहिए।

प्रश्नः– प्लासी के युद्ध में ब्रिटिश विजय की पुष्टि बक्सर के युद्ध ने कर दी। इस कथन का परीक्षण कीजिए।

■■■

KHAN GLOBAL STUDIES
Kisan Cold Storage Campus, Musallahpur, Patna-6
KHAN SIR